'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ६३ | वाराणसी, गुरुवार, २८ मई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

विकास-अधिकारियों से

चुरू (राज०) २१-३-'५९

आप सरकारी नौकर की हैसियत से नहीं, बल्कि लोक-सेवक की हैसियत से काम करें

भारत को आजादी हासिल हुई। पहली पंचवर्षीय योजना समाप्त हो चुकी। दूसरी चालू है और तीसरी की तैयारियाँ हो रही हैं। यह सब अच्छा ही हो रहा है। जिस तरह चीन में लोग स्वयं प्रेरणा से सहकारपूर्वक काम करते हैं, वैसा हमारे यहाँ नहीं हो रहा है। लोगों में कर्तृत्व-शक्ति का अभाव है। वे अपने आप सहकार देने को राजी नहीं होते, यह बड़ी बुरी बात है। इससे जनता में ताकत नहीं बन पाती, लोक-शक्ति, लोक-संग्रह नहीं हो पाता।

लोक-शक्ति जागृत हो

हमारा देश बहुत बड़ा है। जहाँ-तहाँ गाँव-गाँव में बेकारी, अज्ञान, बीमारी आदि का साम्राज्य छाया हुआ है। और आश्चर्य तो यह है कि आजादी के बाद भी यह सब मौजूद है। हमारे यहाँ लोकतन्त्र होने पर भी इन सब का नाश नहीं हो पाता। इसका कारण है लोग अपने में ताकत महसूस नहीं करते। अगर अब भी यही हालत रही तो राज्यतन्त्र और प्रजातन्त्र में कोई फर्क नहीं है, ऐसा माना जायगा। लोकतन्त्र में अगर अच्छे आदमी चुनकर आये, तब तो नसीब है, अन्यथा ? यह भी देश पर एक संकट ही माना जायगा। यही कारण है कि लोगों का उत्साह नहीं बढ़ रहा है। लोगों में कर्तृत्व-शक्ति जागृत हुए बिना लोक-शक्ति नहीं बढ़ायी जा सकती।

आज दिनों-दिन बेकारी बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण लोग बढ़ती हुई जनसंख्या को बतलाते हैं। इसलिए यह ठीक है कि लोगों में संयम रहना चाहिए, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि बढ़ती हुई जनसंख्या को ध्यान में रख कर ही योजनाएँ क्यों नहीं बननी चाहिए ?

इस बीच के भेद को मिटाया जाय

आज एक काम करने की आवश्यकता है। वह है नीचे के स्तरवालों को ऊपर उठाना। दोनों के बीच में जो अन्तर है, भेद है, उसे उखाड़ फेंकना। इसका उपाय दूसरा कोई नहीं है, सिवाय इसके कि लोगों में कर्तृत्व-शक्ति जागृत हो जाय। जनशक्ति से ग्रामदान के आधार पर ग्राम-स्वराज्य खड़ा करने का काम किया जा सकता है। ग्राम-स्वराज्य में जमीन सारे गाँव की होगी। ग्रामोद्योग गाँव के होंगे। गाँव के लोगों को संकल्प करना होगा कि जो भी चीज गाँव में पैदा होगी, वह सारे गाँव की होगी और उसका इस्तेमाल गाँव में ही किया जायगा। इस काम में सरकार मदद देगी, लेकिन काम गाँव-वाले लोग करेंगे। इस प्रकार सरकार और लोग दोनों मिलकर सलाह-मशविरा कर काम करेंगे। लेकिन यह होगा कैसे ? इसके लिए दो-तीन उपाय सुझाना चाहता हूँ।

अपनी आय का एक हिस्सा दीजिये

आपकी तनख्वाह ज्यादा तो नहीं है, लेकिन निम्नस्तरीय लोगों से तो ज्यादा ही है। इसलिए आप उस तनख्वाह में से सम्पत्तिदान दें। घर में छह मनुष्य हैं तो सातवाँ हिस्सा सम्पत्ति-दान दें। यही बात मैं प्रत्येक से कहा करता हूँ। यह दान तब तक देना पड़ेगा, जब तक कि मनुष्य खाता रहेगा। लोगों ने संपत्तिदान दिया है। अगर आप लोगों जैसे सरकारी कर्मचारी भी दान दें तो उसका जनता पर विशेष असर पड़ेगा। इससे जनता सोचेगी कि हाँ, ये लोग न सिर्फ सरकार के ही बल्कि हमारे भी सेवक हैं। फिर जनता खुले दिल से आपके सामने अपनी बातें रखेगी। आप और जनता के बीच निःसंकोच व्यवहार चलेगा। यह बड़ा ही अच्छा होगा। इसलिए आप निश्चयपूर्वक संपत्तिदान दीजिये। मैं यह नियम आप पर जबर्दस्ती लादना नहीं चाहता। मैं केवल चाहता हूँ कि आप सरकारी नौकर की हैसियत से नहीं, बल्कि लोक-सेवक के नाते काम करें।

विचार समझिये और दूसरों को समझाइये

सर्वोदय-विचार-धारा की पाँच-पचास पुस्तकें सर्व-सेवा-संघ ने प्रकाशित की हैं। आप उनका अध्ययन करें। उसके बाद आप जहाँ भी जायें, लोगों से उन्हें खरीदने और पढ़ने का अनुरोध करें। जब तक विचार लोगों की समझ में न आये, तब तक क्रान्ति, परिवर्तन नहीं हो सकता। इसलिए आप पहले विचार

समझें और समझायें। मैं आप लोगों पर यह काम इसलिए सौंप रहा हूँ कि आप पढ़े-लिखे लोग हैं तथा मैं भी अन्य कार्यकर्ता कहाँ से लाऊँ? कोई हमसे पूछता है कि आप के पक्षमुक्त समाज में कौन आयेगा तो मैं आपका नाम बताता हूँ। आप जाति, वर्ग, आदि सभी भेदों को दूर कर निष्पक्ष भाव से जनता की सेवा करें।

स्त्रियों को सहधर्मिणी बनाइये

आपके घर की स्त्रियाँ भी अगर यह काम करती हैं तो उसका भी जनता पर बहुत असर होगा। शिक्षित वर्गों की स्त्रियाँ भी अगर पति के काम में सहयोग न दें तो देश की तरक्की नहीं हो सकती। सर्वोदय-पात्र का काम आरंभ में कठिन है, पर इसकी समाप्ति सरल है। उसको एकत्र करना और पैसे में रूपांतरित कर सर्व-सेवा-संघ को भेजना—यह काम आप कर सकते हैं। खास कर स्त्रियाँ सर्वोदय-पात्र का काम बहुत अच्छी तरह से कर सकती हैं। इसलिए अगर इस काम के लिए आप बहनों को प्रेरित करें तो देश का बहुत भला होगा। आज तक यह मान्यता हमारे यहाँ रही है कि बहनें केवल सांसारिक काम करें। किन्तु अब, जब कि जमाना आगे बढ़ रहा है, बहनों की सामाजिक काम में भी रुचि होनी चाहिए। खाना खाते वक्त आप घर की, खाने की, बाल-बच्चों की बातें करने के अलावा इस तरह के बाहरी काम की भी चर्चा किया करें। इससे बहनों की रुचि बढ़ेगी और वे आप का साथ देंगी। आज देखा जाता है कि बुनकर, किसान आदि नीची कौमों की स्त्रियाँ तो उनके पति के काम में हाथ बँटाती हैं, पर वकील, प्रोफेसर आदि के काम में उनकी स्त्रियाँ हाथ बँटाना नहीं जानतीं। आप लोगों को अपना काम खुद पूरा करना पड़ता है। तो फिर आपके घर की स्त्रियाँ सहधर्मचारिणी कैसे मानी जायेंगी? अतः आप उन्हें समझायें और प्रेरणा दें। आप दोनों मिलकर ही सेवा का कार्य अच्छा कर सकेंगे।

सहयोग से काम करें

सामूहिक विकास और ग्रामदान के काम में समन्वय करने का अब कोई सवाल नहीं है। येलवाल-परिषद् से पूर्व जरूर हम लोगों के कामों में कुछ अन्तर था। लेकिन उसके सामूहिक विकास-कार्य के उद्देश्य में परिवर्तन कर उस अन्तर को मिटा दिया गया है। आज से करीब डेढ़ साल पहले गाँव-गाँव स्वावलम्बी बनें और जमीन की मालकियत सामूहिक हो, यह सामूहिक विकासवालों का उद्देश्य नहीं था। येलवाल-परिषद् के बाद सरकार तथा सर्व-सेवा-संघ के नेताओं ने एकत्र होकर चर्चाएँ कीं। तभी इस उद्देश्य को मान्यता मिली। अब आप लोग सहयोग से काम कीजिए।

गाँवों में केवल उत्पादन बढ़ाने से काम नहीं होगा। ग्रामों में ग्राम-स्वराज्य हो और विकास का काम भी हो। इसके लिए सरकार पर आधारित रहने के बजाय लोक-शक्ति को जागृत किया जाय, यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। यह काम आप और सर्वोदय के कार्यकर्ता मिलकर अच्छी तरह से कर सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि भूदान के कार्यकर्ता आप से परिचित हों और आप उनसे परिचित हों। फिर दोनों साथ मिलकर इस काम को पूरी शक्ति के साथ कीजिये।

कोरापुट के एक ही जिले में इतने ग्रामदान मिले हैं कि वहाँ सामूहिक विकास-खंड का काम हो सकता है, वैसे ही यहाँ भी जहाँ-जहाँ ग्राम-संकल्प हो, उस क्षेत्र को सामूहिक विकास-खंड के लिए चुना जा सकता है। राजस्थानान्तर्गत डूंगरपुर तथा बाँसवाड़ा जिले में करीब १५० ग्रामदान मिले हैं। आप उन स्थानों में विकास-खंड बना देते हैं तो बहुत लाभ होगा। विकास-खंड के लिए ग्राम-समूह चाहिए। वह समूह ग्रामदान-मूलक हो।

भारत इस आशा को पूरा कर सकता है

गरीब-अमीर का भेद मिटे। दोनों मिलकर, एकदिल होकर काम करें। उनका व्यवहार एक कुटुम्ब की तरह हो। इसमें सभी का हित है। यही ग्रामदान की प्रक्रिया है। हम ग्रामदान को रक्षा की योजना कहते हैं। विदेशी लोगों को इस विचार में कोई चीज दिखाई देती है। इसीलिए विदेशी लोग इस काम को देखने के लिए आते हैं। कल हमें रायगढ़ में साँड़ दिखाये गये थे। क्या उन साँड़ों को देखने के लिए विदेशी यहाँ आयेंगे? उनके यहाँ भारत से भी ज्यादा अच्छे-अच्छे साँड़ हैं। इसलिए हमें यहाँ ऐसा शानदार काम करना चाहिए, जिससे दुनिया को तसल्ली मिले। दुनियावाले इस समय नये रास्ते की तलाश में हैं। भारत उस आशा को पूरा कर सकता है।

हम समाज-परिवर्तन का काम अहिंसा से न कर सकें तो फिर हिंसा का राज्य स्थापित होगा। हिंसाधिष्ठित समाज में प्रेम नहीं टिक सकेगा। यदि आप चाहते हैं कि समाज में स्नेह बढ़े तो अहिंसा की शक्ति को बढ़ाने में पुरुषार्थ लगाइये।

एकता पैदा करें

आज जिधर देखो, उधर टुकड़े ही टुकड़े नजर आते हैं। सभी के दिल टूटे हुए हैं। इसकी उसके साथ नहीं बनती और उसकी इसके साथ नहीं बनती। भिन्न-भिन्न पक्षों में तो संघर्ष है ही, लेकिन हरएक पक्ष में भी अलग-अलग ग्रूप्स हैं। उनका भी आपस में मनमुटाव है। हमारे साथ यात्रा में १०-१२ लोग रहते हैं, उनका भी एक दिल नहीं है। यह कैसी दुःखद बात है! हिन्दुस्तान का यह दुर्दैव है कि यहाँ के लोगों में एकता नहीं है। सबके दिलों में एक-दूसरे के प्रति सन्देह है। वह सन्देह मिटे—इसके लिए हृदय-शुद्धि अपेक्षित है। शुद्ध हृदय से जो शब्द निकलते हैं, वे तीर की तरह सामनेवाले के हृदय में प्रविष्ट हो जाते हैं।

अहिंसा : कानून

सेवकों को हृदय शुद्ध करके ही सेवा के क्षेत्र में आना चाहिए। सेवा के क्षेत्र में स्नेह की कमी हो और जबर्दस्ती का प्राधान्य हो तो प्रतिक्रिया हो जाती है। आज कितने कानून बने हुए हैं, लेकिन क्या उनका उल्लंघन नहीं होता? सतीप्रथा बन्द करने का कानून बना तो उसके लिए लोकमत अनुकूल था, इसलिए उस पर अमल हो गया। लेकिन अस्पृश्यता-निवारण का कानून बना, उसपर सर्वत्र यथेष्ट अमल नहीं हो पा रहा है। लोकमत अनुकूल न होने का कारण है—अनुकूल वातावरण का अभाव। हम सबसे पहले हर चीज के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि तैयार करें। अहिंसा में भी कानून आता है, पर उसके अनुरूप वातावरण न हो तो उसका कोई उपयोग नहीं होता। इसलिए हमें लोक-मत संग्रह करने का काम करना चाहिए। सर्वोदय-पात्र का काम इस दिशा में आपके लिए सहायक हो सकता है।

अभी एक भाई ने बताया है कि यहाँ के कलेक्टर के घर की बहनें सर्वोदय-पात्र का काम करती हैं। कुछ बीमारियाँ छूत की होती हैं। वैसे ही हमारा काम भी छूत का काम है। एक घर में इसकी छूत लगी है तो दूसरे घर भी इससे वंचित

न रहने चाहिए। भलाई आत्मा का स्वभाव है। इसलिए इसकी छूत लगना स्वाभाविक है। हम लोगों के स्वभाव को पहचानें, समाज के स्वभाव को पहचानें। यह आवश्यक है। इस काम के लिए आप सरकारी नौकर की हैसियत से नहीं, किन्तु लोक-सेवक की हैसियत से कदम उठाइये। भगवान आपको सफल होने की शक्ति दें।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

बस्तीकलाँ (पंजाब) ११-५-'५९

शिक्षा वह है, जो शरीर, आत्मा और शिल्प को पोषण दे

आज जो तालीम दी जा रही है, उससे लोग काफी असंतुष्ट हैं। क्योंकि इस तालीम में ऐसी कोई योजना नहीं है, जिससे बच्चों का जिस्म मजबूत बने, रूहानी ताकत पैदा हो या दस्तकारी में निपुणता हासिल की जा सके।

त्रिदोष दूर करें

जिस्मानी, रूहानी और दस्तकारी इन तीनों के अभाव को मैंने त्रिदोष नाम दिया है। त्रिदोष (सन्निपात) एक भयानक बीमारी होती है, जिससे इन्सान बच नहीं सकता। आज एक भाई ने सवाल पूछा है कि यह तालीम कब बदलेगी? हमने जवाब दिया कि जब आप बदलेंगे, तब। उसमें परिवर्तन करना आप के हाथ में है। मेरा जवाब उन्हें कुछ अटपटा सा लगा। बच्चे बालिबाल खेलते हैं और जैसे वे गेंद को एक-दूसरे की ओर फेंकते हैं, वैसे उस भाई ने हमारी बात को हमारी ओर करते हुए कहा कि यह तो आप के हाथ में है। खैर, इसे बदलना हमारे हाथ में नहीं है, हमारे मुँह में है। हम बोलकर आप को समझा सकते हैं। जिस दिन आप समझ जायेंगे, उस दिन वह तालीम बदल जायगी। तालीम के ये त्रिदोष समाप्त हो जायेंगे।

हिन्दुस्तान के लोग अभी अपनी शक्ति का अनुभव नहीं कर रहे हैं। आज सभी यह मानते हैं कि जो कुछ काम करना है, वह सरकार करेगी। हमसे क्या कोई काम हो सकता है? यह अन्दरूनी गुलामी है। मैं मानता हूँ कि देश के लिए इससे बढ़कर दूसरा कोई खतरा नहीं हो सकता।

इस देश में व्यक्तिगत संकल्प बहुत होते हैं, लेकिन सामूहिक संकल्प हो सकता है, इसका अहसास अभी तक नहीं हुआ है। लोग समझते हैं कि हमें जो कुछ करना है, वह व्यक्तिगत जीवन के लिए करना है। समूह के लिए सब कुछ सरकार करेगी। यह कितनी भ्रान्त धारणा है! विद्वान लोग सरकार में नहीं होते, वे तो जगह-जगह पड़े हैं।

तालीम में हम तीन चीजें चाहते हैं। (१) बच्चों का शरीर मजबूत हो, (२) आत्मा के लिए कोई चीज मिले और (३) दस्तकारी सिखाई जाय। इसके साथ-साथ गणित, भूगोल आदि विषयों का ज्ञान दिया जाय। हिन्दी तथा पंजाबी तो सिखाई ही जाय, लेकिन कुछ-कुछ संस्कृत भी सिखादी जाय तो बड़ा अच्छा हो। तालीम सरकार के हाथों में रहेगी तो यह काम नहीं होगा। इसके लिए गाँववालों को तालीम की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। इसलिए गाँववाले मिल-जुलकर तालीम के बारे में तय करें तो विद्वानों को अपने यहाँ बुला सकते हैं।

शिक्षण का वर्गीकरण किया जाय

तालीम पाये हुए सभी विद्यार्थी नौकरी नहीं पाते और न सभी को नौकरी मिलती ही है। इसलिए यदि तालीम की व्यवस्था गाँववाले खुद कर लें तो सरकार से भी कहा जा सकता है कि वह अपने विभागों की परीक्षाएँ अलग-अलग रखे। जिसे वे परीक्षाएँ देनी होंगी, वह फीस देकर परीक्षा में बैठेगा। उस परीक्षा के लिए यह जरूरी नहीं होगा कि वह सरकारी हाई-स्कूल में पढ़ा-लिखा हो या डिग्रीप्राप्त ही हो। घर पर पढ़ा-लिखा हो, तब भी उसे उस परीक्षा में सम्मिलित होने का अवसर दिया जायेगा। उत्तीर्ण होने पर परीक्षार्थियों को उस विभाग में नियुक्त किया जाय।

खादी का शास्त्र

एक भाई ने आज यह भी पूछा कि इन दिनों अम्बरचर्खे बढ़ रहे हैं, इससे लगातार पैदावार भी बढ़ रही है और खादी का ढेर लग गया है। खादी बिकती नहीं है। इसलिए अब क्या किया जाय? हमने उससे कहा कि अम्बरचर्खा ज्यादा पैदा करता है तो सादा चर्खा चलाओ और उससे काम न बने तो तकली चलाओ और तकली से भी न हो तो अंगुली से कातो, ताकि कपड़े का ढेर न लगे।

अम्बरचर्खा इसलिए गुनहगार है कि उसने खादी का ढेर लगा दिया है। सरकार ने अम्बर को कुछ मदद दी है, फिर भी अगर वह मिल के कपड़े की बराबरी नहीं कर सकता है तो उसके कपड़े को लोग क्यों खरीदेंगे? अंबर का कपड़ा तभी खरीदा जा सकेगा, जब उसके लिए भावना और संकल्प होगा। भावना और संकल्प के अभाव में खादी नहीं बिकेगी। उसका ढेर लगने ही वाला है।

अभी खादी को सरकार की ओर से मदद मिल रही है। लेकिन अब थोड़े दिनों बाद यह कहा जानेवाला है कि हमने खादी को मदद तो बहुत दी, लेकिन जनता उसे खरीदती नहीं है, इस लिए अब आगामी पंचवर्षीय योजना में दो सौ करोड़ के बदले बीस करोड़ रुपये दिये जायेंगे। इस तरह यह खादी का झरना सूखनेवाला है। यदि हमें खादी को जीवित रखना है तो यह आवश्यक है कि खादी को सरकार की ओर से संरक्षण मिले। यदि सरकार संरक्षण न दे तो जनता का कर्तव्य है कि वही उसे संरक्षण दे। हिन्दु, सिख गाय का गोश्त नहीं खाते। यह उनका संकल्प है। इसी तरह खादी के लिए भी संकल्प होना चाहिए कि वे मिल का कपड़ा नहीं पहनेंगे। संकल्प होने से ही चीज अर्थ-शास्त्र के बाजार से अलग होती है। खादी आज के अर्थशास्त्र की चीज नहीं है, वह तो ग्रामीण अर्थशास्त्र की चीज है, जो भावना के अधिष्ठान पर ही टिक सकती है। आप भावना से खादी को स्वीकार करेंगे, तभी खादी का ढेर नहीं लगेगा। जैसे बूँद-बूँद वर्षा होती है, वैसे ही जगह-जगह खादी होगी और व्यवहार में लाई जायगी।

ग्राम-संकल्प से पहले

मान लीजिए—आज गाँववाले तय करें कि हम खादी ही खरीदेंगे तो गाँव के गरीब कहेंगे कि खादी बहुत महँगी है, इसलिए हम नहीं खरीद सकते। तब आप क्या कहेंगे? इसीलिए ग्राम-संकल्प करना हो तो पहले गाँव के गरीबों को आश्वस्त करना

आवश्यक है। गाँव के गरीबों को यह महसूस होना चाहिए कि यहाँ हमारी भी चिन्ता की जा रही है। इसके लिए ग्रामदान के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं है। ग्रामदान के प्रथम चरण के तौर पर गरीबों को गाँव की जमीन का छठा हिस्सा तत्काल देना चाहिए। फिर जो ग्राम-योजना बनेगी, उसमें भी लोग सहर्ष सम्मिलित हो जायेंगे।

साँझीवालता से डरिये नहीं

आज एक जमींदार भाई हमसे मिलने आये थे। उन्होंने हमसे बातें कीं। वे ग्रामदान को सहकारी कृषि के रूप में समझ रहे थे। सहकारी कृषि की सफलता में उन्हें सन्देह था। अभी पंजाब में 'साँझीवालता' एक शब्द चल रहा है। यह गुरुओं का चलाया हुआ शब्द है। लेकिन एक भाई ने बताया कि इस शब्द को भी गलत तरीके से इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे डर उत्पन्न हो गया है। साँझीवालता में जमीन साझी की होगी और पत्नियाँ भी साझी की होंगी। यह कितनी भयानक बात है? हम कहना चाहते हैं कि ग्रामदान में सारी जमीन एकत्र करने की कोई जरूरत नहीं है। ग्रामदान के मानी है—जमीन की मालकियत मिटाना। उसका मतलब है कि आप जमीन बेच नहीं सकेंगे, रेहन नहीं रख सकेंगे।

मालकियत मिटाकर छठा हिस्सा जमीन भूमिहीनों को दी जाय। शेष भूमिवानों के पास रखी जा सकती है। पाँच या दस साल के बाद फिर से बँटवारा हो जायगा। ग्रामदान में मालकियत गाँव की रहेगी। फिर गाँववाले चाहें तो अलग-अलग खेती कर सकते हैं, दो-चार मिलकर खेती कर सकते हैं और चाहें तो सहयोगी खेती भी कर सकते हैं।

कार्यकर्ताओं की सेना चाहिए

ग्रामदान बिल्कुल सरल बात है। लेकिन इसे समझाये कौन? 'गुरुमुखी नादम्, गुरुमुखी वेदम्।' गुरूमुख चाहिए, छापामुख नहीं। घर-घर जाकर प्रेमपूर्वक सम्यक् विचार समझानेवाले कार्यकर्ता चाहिए। इसीलिए हम शान्ति-सेना की बात करते हैं। सामूहिक संकल्प के बिना न तो कोई काम हो सकता है और न शान्ति-सेना ही तैयार हो सकती है। आज हमारे कार्यकर्ता छोटे-छोटे संकल्प करते हैं। हाथ-चक्की का आटा खाने का संकल्प करते हैं। इससे उन्हें तो तकलीफ होती ही है, दूसरे लोगों को भी तकलीफ होती है। इसलिए ऐसे व्यक्तिगत संकल्पों की अपेक्षा सामूहिक संकल्पों को महत्त्व देना चाहिए। समूह का संकल्प भी छोटा हो सकता है। मैंने पंजाबवालों के सामने एक छोटा सा संकल्प रखा है। वह यह कि हर घर में सर्वोदय-पात्र स्थापित किया जाय। फिर लोग कार्यकर्ताओं से पूछेंगे कि पात्र में अनाज इकट्ठा हो गया है। उसका अब क्या करना है? कार्यकर्ता कहेगा कि क्या आप खादी खरीदते हो? सर्वोदय-साहित्य पढते हो? इस प्रकार व्यक्तिगत बातचीत से दिल खुलेंगे। यह बहुत आसान चीज है।

आज जब हमने यही कार्यक्रम उस जमीन्दार भाई के सामने रखा, तब उन्हें भी लगा कि यह हो सकनेवाली चीज है। नहीं तो अक्सर लोग समझते हैं कि विनोबा सन्त पुरुष है। उसमें अक्ल नहीं है, हृदय है। अक्ल तो देहली और चण्डीगढ़ में है। गुरु नानक और विनोबा आदि की बातें सुनने की हैं, करने की नहीं। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि हमारे पास मोक्षद्वार भी है और परिवार का आधार भी है।

दो परम्पराएँ

हिन्दुस्तान में आजतक दिल और दिमाग बँटा हुआ था। दिल सन्त पुरुषों के पास था और दिमाग राजनीतिज्ञों के पास। बादशाह और सन्तों की दो परंपराएँ अक्षुण्ण चलती रहीं। गांधीजी के जमाने में वे दोनों धाराएँ एकत्र हो गयीं। गांधीजी ने इतिहास में एक बहुत बड़ी बात की। मैं बार-बार गांधीजी का नाम नहीं लेता हूँ, क्योंकि आजकल फैक्टरी खोलनेवाले लोग भी गांधीजी का नाम लेकर ही भाषण आरंभ करते हैं। वे गांधीजी का नाम लें और हम भी गांधीजी का नाम लें तो लोगों को लगने लगता है कि हम किसकी बात मानें और किसकी न मानें! इसलिए हमने गांधीजी का नाम लेना छोड़ दिया और आपका नाम लेना शुरू कर दिया है।

ग्रामदान बिलकुल आसान है। जमीन की मालकियत मिटाकर गाँव की योजना बनानी है, ग्रामोद्योग खड़े करने हैं, तालीम अपने हाथ में लेनी है, जिससे कि गाँव में सरकार का दखल कम-से-कम हो। इससे सरकार का भी बोझ कम होगा। प्रो० महलनोबिस ने कहा था कि "ग्रामदान होता है तो हमारा बोझ हलका हो जाता है। आज हमें ३५ करोड़ लोगों के नाम याद रखने पड़ते हैं। ग्रामदान के बाद पाँच लाख गाँवों के याद रखने पड़ेंगे, इससे इन्तजाम करना आसान होगा।" हाँ, ग्रामदान से एक बड़ा खतरा भी देश पर आयेगा। इन ३५ लाख सरकारी नौकरों का क्या होगा? हम उन्हें भी जमीन दे देंगे।

वकील—सत्य के रक्षक या झूठ के प्रचारक?

एक दफा वकीलों ने हम से कहा कि आप तो हमें बेकार बना रहे हैं। हमने उनसे कहा कि हम आपको कारगर बना रहे हैं। हमें ५ लाख गाँवों के लिए ५ लाख वकील चाहिए। वकील कानून का ज्ञान रखते हैं। इसीलिए ग्रामदान के गाँव में वकील सबको कानूनी सलाह इस तरह देंगे कि सबकी तसल्ली हो, झगड़े मिटें। उसके साथ-साथ उन्हें थोड़ी जमीन भी दी जायेगी और वे रोजाना तीन घंटे बच्चों को पढ़ायेंगे। इस तरह वकील छोटे-छोटे गाँवों में जायेंगे तो उनकी ज्ञान-प्रभा फैलेगी।

कुरान में परमेश्वर के लिए 'वकील' शब्द का इस्तेमाल किया है। 'हे परमेश्वर तू मेरा वकील है।' वकील याने सबके हितों को अच्छी तरह सम्हालनेवाला। एक जगह भगवान ने मुहम्मद साहब को धमकाया कि "क्या तू वकील है? बलागुल मुबीन्। वकील तो मैं हूँ। तेरा काम है बलाग, मेरा काम है हिसाब।" इस तरह वकील शब्द के लिए इतना आदर था। आज तो वकील लोगों को झूठ सिखानेवाला बताया गया है। वकील के पास कोई आदमी अपना केस लेकर जाता है तो वकील उससे कहता है कि तुम सच बोलोगे तो केस हारोगे, इसलिए तुम्हें मेरे कहने के मुताबिक बोलना होगा। इस तरह वह झूठ कंठ करवाता है, जैसे बच्चों से श्लोक आदि कंठ करवाये जाते हैं। वकील मुझे क्षमा करें, लेकिन आज हकीकत यह है कि वकीलों ने झूठ फैलाया है। होना यह चाहिए कि वकील याने सत्य की रक्षा करनेवाला। हमारी ग्रामदान की योजना में वकील वैसे बन जायेंगे।

अभी बीज तो बो रहा हूँ, फसल काटने भी आऊँगा

आज एक भाई ने कहा कि आज तक हमने काम नहीं किया, इसलिए यहाँ पर ग्रामदान नहीं हुए। हम कहते हैं कि 'अभी तक नहीं किया', ऐसा मत कहो 'अब करेंगे,' यह कहो। आज, कल में नहीं किया तो भविष्य में करो। अभी मैं यहाँ पर बीज बोकर जा रहा हूँ। ३॥ महीना कश्मीर की यात्रा करके लौटूँ, तब मुझे फसल काटने के लिए बुलाना। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

होशियारपुर (पंजाब) १७-५-'५९

भारत अपनी तरक्की के लिए लोकशाही में नया विकास करे

जब हिन्दुस्तान में राज्यतन्त्र चलता था, तब दो बातें थीं—जब युधिष्ठिर, अशोक, श्रीहर्ष, अकबर आदि धर्मात्मा राजाओं का शासन चलता था, तब प्रजा सुखी रहा करती थी और जब दुरात्मा राजा शासन-सूत्र हाथ में लेता था तो प्रजा दुःखी होती थी। याने कि यह सब प्रजा के नसीब का खेल था। 'यथा राजा तथा प्रजा' वाली कहावत भी चरितार्थ होती थी। परन्तु हाँ, इस नसीब के खेल में खतरा पग-पग पर था। एक व्यक्ति के हाथ में तमाम प्रजा का नसीब सौंपना था—यह एक अजीब बात थी। लोगों ने राज्यतन्त्र को उपयुक्त न समझकर प्रजातन्त्र का बीजारोपण किया। आज विभिन्न देशों में प्रजातन्त्र की स्थापना हुई है और हो रही है। लोकशाही में जनता में जागृति होती है, सबको जिम्मेवारी का भान हो जाता है। समाज का विकास होता है। इन सब कारणों से लोकशाही एक बहुत अच्छी चीज है, इसमें कोई शक नहीं।

यह लोकतंत्र !

जहाँ तक हिन्दुस्तान का सवाल है—बहुत सोचने की जरूरत है। हमारे यहाँ अनेक भाषा, अनेक सूबे, अनेक धर्म; एक धर्म में अनेक पंथ, अनेक पंथ में अनेक जातियाँ—आदि नाना प्रकार की विविधताएँ हैं। इस तरह विविधताओं से परिपूर्ण इस देश में पाश्चात्य देशों की लोकशाही का नमूना उतारना कहाँ तक उचित है? यही सोचना है। इसीके परिमाणस्वरूप आज हमारे यहाँ गाँव-गाँव में आग लग गयी है। बहुमत तथा अल्पमत के झगड़े गाँव-गाँव में पहुँच गये हैं।

राजाओं के जमाने में भी ये सब बातें नहीं थीं, ऐसी बात नहीं। राजा के चन्द सरदारों में आपस में द्वेषभाव पर्याप्त मात्रा में चलता था। एक सोचता था कि राजा मुझ पर उतना विश्वास नहीं रखता है, जितना कि दूसरे सरदार पर। आज लोकशाही में भी जनता चन्द लोगों को चुनकर असेंबली, पार्लमेन्ट आदि स्थानों में भेजती है तो वहाँ भी आपस में द्वेषभाव शुरू हो जाता है। कोई कहता है कि मैंने दस साल तक जेल काटी, फिर भी मुझे मन्त्री नहीं बनाया गया, अमुक ने तीन ही साल जेल काटी तो मन्त्री बन गया। जो मन्त्री बना है, वह सोचता है कि अमुक को इतना बड़ा महकमा मिला है, मुझे नहीं मिला। इस तरह ऊपर से लेकर नीचे तक द्वेष ही द्वेष भरा है। राजाओं के जमाने के सरदारों के द्वेष और आज के द्वेष में फर्क इतना ही है कि पहले वह एक-दो सरदारों में पाया जाता था और आज अत्यन्त व्यापक पैमाने पर है। आज १५-२० हजार लोगों में ईर्ष्या चलती है। एक-दूसरे को दबाने के लिए जिससे जितना ताकत बटोरते बनती है, उतनी वह बटोर लेता है। ये १५-२० हजार लोग दही बनकर समाजरूपी दूध को बिगाड़ रहे हैं। गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति का मसला इतना सीधा-सरल है, तब भी वहाँ द्वेषी लोग पहुँच जायेंगे। वे वहाँ की सत्ता को हथियाने की चेष्टा करेंगे। याने कि वह भी सत्ता का एक साधन ही बन गया है। और तो क्या, म्युनिसिपलिटी, भारत-सेवक-समाज, साधु-समाज, ग्रामपंचायतों जैसी सेवावाली संस्थाओं में भी मौका पाकर वे द्वेषी लोग पहुँच ही जाते हैं। इस प्रकार आज यह द्वेषवाला प्रोग्राम देशव्यापी बन रहा है, इससे देश का बड़ा भारी नुकसान हो रहा है।

गाँव पर शहर का आक्रमण

गुरु नानक के कहा है कि कुछ लोग 'असंख्य मूरख अंध घोर' होते हैं। देहाती लोग ऐसे ही होते हैं। वे इस समय अंधकार में पड़े हुए हैं। वे बिचारे 'असंख्य चोर हरामखोर' के अनुसार शहरी सत्ता-लोलुप, पढ़े-लिखे चोर-हरामखोर लोगों द्वारा लूटे जायेंगे। यह सब मेरी अपनी बातें नहीं हैं। नानक ने भी कहा है—जहाँ ये इकट्ठा हुए कि उनकी लड़ाई शुरू। दोनों की लड़ाई शुरू होते ही कोई तीसरी जमात आकर अपना अमल कर लेती है। हिन्दुस्तान में आज तीनों प्रकार के लोग दिखाई देते हैं।

मैं यह सब कह तो रहा हूँ। मगर इसमें मुझे बड़ा दुःख होता है। गुरु नानक ने कहा है—'नानक नीच करि विचार' अर्थात् 'नीच नानक यह सब कह रहा है।' एक जगह उन्होंने और कहा है कि हत्या करनेवाला हत्या के लिए जिम्मेवार है, चोर चोरी के लिए, मगर जो इस बात की निन्दा करता है, वह इन सभी के लिए जिम्मेदार है। इसीलिए नानक ने अपने लिए 'नीच' विशेषण लगाया है। नानक को यह सब इसलिए कहना पड़ा, क्योंकि इसमें निन्दा थी। वे निन्दा करना नहीं चाहते थे, यही हाल मेरा भी है। मुझे भी निन्दा से सख्त नफरत है। मगर मुझे लाचार होकर यह कहना पड़ता है। मैं जानता हूँ कि हर मनुष्य के अन्दर स्वच्छ निर्मल चीज मौजूद है, मैं उसे बाहर लाना चाहता हूँ। मेरी कोशिश इसी के लिए है। मगर अभी तक तो मेरे मार्ग में विघ्न ही आते जा रहे हैं।

इस तरह हम देख रहे हैं कि पश्चिमी लोकतन्त्र की नकल कर हम लोगों ने अपना नाश कर लिया है। नहीं तो लोक-शाही आज तक अमल में लाई गयी सभी योजनाओं में सर्वोत्तम है। हमें अपनी इन्सानियत तथा गुणों को कायम रखना होगा। अगर बुनियाद ही ढह गयी तो मकान कहाँ से रहेगा? वह भी ढह जायगा।

लन्दन की अक्ल का उदाहरण

आजकल कहा जाता है कि हम बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। भाखड़ा नांगल, सिंदरी का कारखाना, चितरन्जन आदि के कामों को देखकर बाहर के लोग भी हमें प्रगति का प्रमाणपत्र देते हैं। मगर वास्तव में हम क्या प्रगति कर रहे हैं? विदेशी लोग जब लंदन या पेरिस से दिल्ली आते हैं तो उन्हें ऐसा लगता है कि हम वापस लंदन पहुँच गये हैं। इसका कारण है कि लंदन की दुकानों में लंदन का माल बिकता है और दिल्ली की दुकानों में भी लंदन का माल बिकता है। और आश्चर्य यह है कि हम इसमें भी गौरव का अनुभव करते है। इसका अर्थ यह हुआ कि लंदनवाले अक्ल रखते हैं पर नयी दिल्लीवालों को अभी उसे हासिल करना है।

गत महायुद्ध में हर देश में चीजों के दाम बढ़े। कहीं दो सौ तो कहीं चार सौ प्रतिशत तक बढ़े थे। लेकिन कुछ लोगों ने इतने संकट के समय भी अत्यन्त कुशलता के साथ काम किया और दाम न बढ़ने दिये। इंग्लैंड में सिर्फ दस प्रतिशत दाम बढ़े! इंग्लैंड की अक्ल के बारे में एक दूसरी मिसाल देखिये। जब उन्होंने देखा कि अब हिन्दुस्तान को अपने हाथ में रखना ठीक नहीं है, बस, तुरन्त उन्होंने तारीख मुकर्रर कर इस पर से कब्जा

हटा लिया। खैर, यहाँ तक तो गनीमत थी, मगर इसके बाद जो हुआ, वह तो इंग्लैंड के इतिहास में सुवर्णाक्षरों से लिखने लायक है। हिन्दुस्तानी लोगों ने लार्ड माउन्ट बैटन से ६-७ महीने हिन्दुस्तान में ही रहने की प्रार्थना की। इससे बढ़कर इंग्लैंड की क्या जीत हो सकती है? दिल्ली में महात्मा गांधी की जय, पंडित नेहरू की जय के साथ-साथ लार्ड माउन्ट बैटन की जय का भी नारा बुलन्द किया गया था। कहने का मतलब यह कि इंग्लैंड ने भारत के प्रति द्वेषभावना न रखते हुए भारत से सदिच्छा प्राप्त की। ठीक इसके विपरीत पुर्तगाली इतने बेवकूफ हैं कि छोटे-से गोवा के लिए लड़ मर रहे हैं। इसलिए भारत से उनके अच्छे सम्बन्ध नहीं हैं। इंग्लैंडवालों के सम्बन्ध भारत से अच्छे होने के कारण उनका माल यहाँ खूब खपता है। यही कारण है कि जब वे नयी दिल्ली में आते हैं तो उन्हें यही लगता है कि हम अपने ही देश में हैं और इसीलिए वे कहते हैं कि भारत खूब प्रगति कर रहा है।

भारत की कसौटी : भूमि की समस्या

अमेरिका के एक भूतपूर्व राजदूत ने एक किताब में लिखा है कि भारत तरह-तरह की प्रगति कर रहा है। लेकिन अन्त में उसने यही लिखा है कि भारत सरकार की कसौटी इसी बात पर है कि वह भूमिहीनों के लिए क्या करती है। भूमिहीनों की समस्या सारे एशिया की समस्या है। उसी के लिए विनोबा आठ साल से घूम रहा है। क्या उस समस्या की तरफ आपका ध्यान जाता है? अगर नहीं तो राष्ट्र की तरक्की कैसे होगी? हमारे यहाँ विकास का चाहे कितना ही काम क्यों न हो, लेकिन जब तक भूमि-समस्या हल नहीं होती, तब तक गरीबों की तरक्की नहीं हो सकती और न राष्ट्र का सर्वांगीण विकास ही हो सकता है।

सर्वोदय का प्लेटफार्म

आज सबसे बड़ा आश्चर्य हमें सिखधर्म को देखकर होता है। जिस धर्म का प्रादुर्भाव केवल एकता का निर्माण करने के लिए हुआ, उसी धर्म में एकता का नितान्त अभाव है! उसी में फूट! यह सब पालिटिक्स का प्रभाव है। यह चीज पंजाब के लिए अधिक-से-अधिक खतरे की है। जैन-मन्दिरों के पास भी करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति पड़ी है। पंडित नेहरू ने अभी कहा कि उस सम्पत्ति के बारे में तहकीकात कर उसका अच्छा इस्तेमाल कैसे हो, इसके लिए सोचना होगा। जो भी हो, फूट मिटाने तथा मंदिरों की संपत्ति का सदुपयोग करने के लिए सब के दिलों को जोड़ने का काम करना है। भारत को मजबूत बनाने का काम एकता के सिवाय और कोई नहीं कर सकता। इसलिए मेरी यह कोशिश रही है कि सबके दिल जुड़ जायँ और एक ऐसा प्लेटफार्म हो, जहाँ सब एकत्र होकर सभी भेदों को भूलकर गरीबों की भलाई का काम कर सकें। यह प्लेटफार्म 'सर्वोदय' है। आप लोग मंदिर और गुरुद्वारे की तरह अपने-अपने राजनैतिक पक्षरूपी जूते बाहर उतार कर सर्वोदय के प्लेटफार्म पर आयें। मन्दिर में जूता पहन कर जाना जितना हानिकर माना जाता है, उससे कहीं अधिक हानि पार्टी का जूता पहनकर सर्वोदय के प्लेटफार्म पर आने में है।

एक बनो, नेक बनो

मैंने एक वाक्य कहा था—'एक बनो, नेक बनो।' हिन्दुस्तान के लोग नेक बनेंगे ही, क्योंकि नेक बने बिना एक बना ही नहीं जा सकता। हाँ, डाकुओं की जमात अवश्य नेक बने बिना एक बन सकती है। लेकिन हिन्दुस्तान में डाकू नहीं रहते। गुरुओं ने कहा—'एक ॐकार सतनाम।' ॐकार के पीछे 'एक' इसलिए लगाया कि हम एकता की ताकत महसूस करें। ॐकार अलग-अलग कैसे हो एकता है! कोई हर हर महादेव कह कर गला काटते हैं तो कोई 'अल्लाह हो अकबर' कहकर गला काटते हैं। मगर दोनों का ध्येय एक होता है—एक ही ईश्वर, एक ही अल्लाह। इसीलिए कहा गया 'एक ॐकार...'।

इस गाँव में बहनों ने एक स्कूल चलाया है। यह सुनकर हमें बड़ी खुशी हुई। मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ। मैं मानता हूँ कि बच्चों की तालीम बहनों के हाथ में हो तो बच्चों को प्रेम और ज्ञान दोनों की तालीम साथ-साथ मिलेगी। बहनें शान्ति का काम करने के लिए आगे आयें तो बड़ा अच्छा होगा। गांधीजी की इच्छा के अनुसार वे एक लोक-सेवक-संघ बनायें। मुझे विश्वास है कि पंजाब की बहनें खूब काम कर सकती हैं, क्योंकि यहाँ की स्त्रियों में सत्संग चलते हैं और यहाँ पर पर्दा भी नहीं है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

मुकेरिया (पंजाब) १९-५-'५९

अहिंसा और शांति की शक्ति को प्रकट करने से ही हमारा नैतिक बल बढ़ेगा

हम आठ साल से घूम रहे हैं। कई प्रांतों में यात्रा चली। सर्वत्र लोगों में सर्वोदय का संदेश सुनने की अत्यन्त उत्सुकता पायी गयी। बिहार गरीब है। वहाँ हमने प्रेम का जो दृश्य देखा, वही दृश्य उड़ीसा में भी देखा। उड़ीसा बिहार से भी ज्यादा गरीब है। बिहार और उड़ीसा में जितना प्रेम देखा, उतना ही प्रेम तमिलनाड़ में था। दक्षिण के लोग हमारी भाषा नहीं समझ सकते। हम जो कुछ भी बोलते थे, उसका अनुवाद कर के सुनाया जाता था। फिर भी हजारों लोग आते थे, घंटों बैठकर बिलकुल खामोशी से हमारी बातें सुनते थे। जो दृश्य हमने दक्षिण में देखा, वही गुजरात में देखा, राजस्थान में भी देखा और अब हम पंजाब में आये हैं, तब भी वही दृश्य देख रहे हैं। कार्यकर्ताओं को लगता था कि पंजाब में तरह-तरह के झगड़े हैं, इसलिए यहाँ का कार्यक्रम उतना आकर्षक नहीं रहेगा। लेकिन यहाँ कार्यकर्ताओं की धारणा गलत सिद्ध हो रही है। लोगों में कितनी उत्सुकता है! कितना प्रेम है! जब मैं आप लोगों को इस तरह सामने बैठा हुआ पाता हूँ तो मेरे पर बहुत असर होता है।

पंजाब का काम गहराई में पैठ रहा है

लोग मुझ से पूछते हैं कि पंजाब में कितने ग्रामदान मिले, कितना भूदान मिला? मैं उन्हें यह कहता हूँ कि कुछ वनस्पतियाँ ऐसी होती हैं, जिनका बीज बोते ही फौरन उग आता है। दस-बारह घंटे में साफ-साफ उसका आकार दिखाई पड़ने लगता है। लेकिन कुछ वनस्पतियाँ ऐसी भी होती हैं कि जिनके बीज जल्दी नहीं उगते। लोग समझते हैं कि ये बीज बेकार गये। लेकिन

वे ही बीज समय पाकर रंग लाते हैं। उनके पौधे बहुत मजबूत होते हैं और टिकते भी बहुत हैं। यहाँ मैं पंजाब में उन्हीं दूसरी तरह की वनस्पतियों के बीज देख रहा हूँ। यहाँ अभी जो बीज बोया जा रहा है, वह बहुत गहरा जा रहा है। मुझे विश्वास है कि इसका फल बहुत शानदार होगा।

दुनिया की बादशाही का रहस्य

सिकन्दर का पहला आक्रमण पंजाब पर हुआ। पोरस ने उसका मुकाबला किया। यद्यपि पोरस हार गया, सिकन्दर जीता, किन्तु वह उसकी जीत नाममात्र की जीत थी। उसके सिपाही थककर चकनाचूर हो गये थे। उन्होंने फिर हिन्दुस्तान में आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। लाचार होकर सिकन्दर को पंजाब से वापस लौट जाना पड़ा।

सिकन्दर जब वापस जा रहा था, तब उसे जंगल में पेड़ के नीचे बैठा हुआ एक फकीर मिला, जो अपनी मस्ती में गा रहा था। सिकन्दर ने उससे पूछा कि तुम कौन हो? "मैं दुनिया का बादशाह हूँ", यही उसने जवाब दिया। सिकन्दर उसका जवाब सुनकर स्तब्ध रह गया। उसे लगा कि मैंने लाखों रुपया खर्च किया, इतनी बड़ी सेना का संगठन किया, जिन्दगी-भर मेहनत की, फिर भी पूरी दुनिया को जीतने में कामयाब नहीं हो रहा हूँ और एक यह शख्स है, जो अपने आपको दुनिया का बादशाह बताता है। सिकन्दर ने फकीर से फिर पूछा, "तुमने ऐसा क्या काम किया है, जिससे तुममें इतनी मस्ती आ गयी?" फकीर ने वही बात कही, जो गुरु नानक ने 'जपुजी' में कही है। "मन जीते जग जीते।" अगर दुनिया को फतह करना चाहते हो तो मन को जीतो। दुनिया की बादशाही का यही रहस्य है।

सिकन्दर यहाँ से क्या ले गया? हीरे, पन्ने, माणिक, मोती? नहीं, वह यह कुछ भी नहीं ले गया। वह इन सबको पत्थर का टुकड़ा समझकर छोड़ गया और हिन्दुस्तान से ले गया जिवन्त हीरे।

कौन क्या ले गया?

महंमद गझनवी की कहानी मशहूर है। उसने भी हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया था। वह यहाँ से धन, सम्पत्ति आदि बहुत कुछ लूट कर ले गया। उसने उन सबकी अलग-अलग कोठरियाँ बनवायीं, लेकिन आखिर एक दिन वह आया, जिस दिन यमराज उसे ले जाने के लिए आ पहुँचे। मौत के समय गझनवी को एक बार फिर वह सारी संपत्ति दिखायी गयी। उसे देखकर और यह सोचकर कि सारी संपत्ति को मुझे यहीं छोड़ जाना है, वह बहुत रोया। रोते-रोते मर गया। महम्मद गझनवी बेसमझ था और सिकन्दर था समझदार! इसलिए सिकन्दर हिन्दुस्तान के वास्तविक हीरों याने विद्वानों को अपने देश में ले गया। उसका देश ग्रीस था। ग्रीस में पहले भी विद्या थी। यूरोप में पहले अन्धःकार था। उस तरह का अन्धःकार ग्रीस में नहीं था। वहाँ पंडित थे, विद्या थी। लेकिन सिकन्दर जब यहाँ से और विद्वानों को ले गया तो वहाँ शिक्षा में बहुत तरक्की हुई। यह सारी घटना तवारीख में लिखी गयी है।

पंजाब में आक्रमण सह लेने की क्षमता है

भारत में सब से पहला आक्रमण पंजाब पर होता था। इससे पंजाब को हमले सहन करने की आदत हो गयी है। पहले हमले का पंजाब पर एकदम असर नहीं होता। इसलिए आठ साल तक सारे भारत की यात्रा करने के बाद हम पंजाब में आये। हमने स्थितप्रज्ञ-दर्शन नाम की एक किताब लिखी है। उसमें यह लिखा है कि दुःख का असर पहले क्षण में नहीं होने देना चाहिए। 'माँ मर गयी', यह सुना तो पहले क्षण में दुःख नहीं होना चाहिए। कोई भी समाचार सुना, कोई भी घटना घटित हुई, फिर भी उसका असर अपने पर एकदम नहीं होने देना चाहिए। पहले क्षण में सावधान रहने की जरूरत है। यह विद्या गुरुवाणी में है। गुरुवाणी के कारण पंजाब के लोगों को इस बात का अभ्यास हो गया है। अनेक आक्रमणों के कारण अपने अनुभवों में पंजाबवालों ने इस दिशा में परिपक्वता भी प्राप्त कर ली है। इसलिए यहाँ की जनता किसी हमले का परिणाम तत्काल नहीं होने देती। यह बहुत अच्छी बात है।

पंजाब को कैसे जीता जाय?

पंजाब को कैसे जीतना चाहिए, इस सम्बन्ध में मैं एक घटना सुनाऊँगा। गुरु नानक से डेढ़ सौ साल पहले महाराष्ट्र के एक सन्त यहाँ आये थे। उन्होंने यहाँ की भाषा का अध्ययन किया और फिर यहीं की भाषा में पद्य-रचना भी की। वे यहाँ कपड़ा रंगने और सीने का धन्धा करते थे। अपनी कमाई करके खाते थे और भगवान की भक्ति के रूप में कुछ पद्य भी लिखते थे। पंजाबी में सबसे पहले पद्य किसने लिखे? अगर इस बात का अनुसंधान किया जाय तो सम्भवतः उसी सन्त का नाम पहला आयगा। वे थे नामदेव।

नामदेव १५ साल पंजाब रहे। उन्होंने यहाँ के लोगों का दिल जीत लिया। महाराष्ट्र में नामदेव का नाम घर-घर में लिया जाता है। वैसे ही यहाँ के वातावरण में भी उनका नाम मुखरित है। वे पंजाब के साथ एकरूप हो गये थे। पंजाब को उन्होंने जीत लिया। दूसरे लोगों ने बहुत कोशिश की, लेकिन वे पंजाब को नहीं जीत सके। पंजाब हमेशा अजीत रहा है।

ऊपर के पर्त

आज एक भाई हमसे कह रहे थे कि यहाँ चारित्रिक पतन बहुत है। मैंने कहा कि वह अन्दर नहीं है, ऊपर-ऊपर से है। मेरी माँ ने मुझे एक सबक सिखाया था। वह एक दिन गोबी का ऊपर का छिलका निकाल रही थी। वह छिलका बहुत अच्छा था। मैंने माँ से कहा कि इतने अच्छे छिलके को क्यों निकाल रही हो? उसने कहा—ऊपर के छिलके पर हवा का परिणाम है। इसलिए उसे निकालना ही चाहिए। अन्दर उमदा चीज मिलती है। मैं माँ की इस बात से बहुत सीखा हूँ। अभी पंजाब में जो झगड़े, मतभेद और बुद्धि-भेद दिखाई देते हैं, वे सारे ऊपर-ऊपर के हैं। इन ऊपर के भेदों को हमें हटा देना चाहिए। मनुष्य के दिल और दिमाग पर ऊपर-ऊपर की हवा का परिणाम होता है। जैसे ही हम इन ऊपर की चीजों को हटा देंगे, वैसे ही अन्दर का असली रूप प्रगट हो जायगा। वह असली रूप परमेश्वर है। "सच खंड बसे निरहंकार करी करी वेखे नजर निहाल।" सच खंड में निरहंकार निवास करते हैं। वे अपनी कृपादृष्टि से भक्तों के दुःखों को दूर कर देते हैं।

एक भाई ने हमें कहा की यह भूमि आपके विचारों के लिए प्रतिकूल सिद्ध होगी। मैंने कहा—अगर यही भूमि प्रतिकूल होगी तो दूसरी कोई भी भूमि अनुकूल नहीं हो सकती। यहाँ से वेद-

ध्वनि निकली है। मैं बचपन से वेदों का अध्ययन कर रहा हूँ। इसलिए अगर इस भूमि में मेरे लिए अनुकूलता न हो सकी तो मुझे जंगल में जाना होगा। जंगली जानवरों के साथ ही रहना होगा। मैं विश्वास करता हूँ कि पंजाब जैसी भूमि, जहाँ कि वेद, गीता, उपनिषद् आदि उच्चरित हुए हैं, मेरे लिए कभी प्रतिकूल सिद्ध नहीं हो सकती।

प्रतिस्पर्धा की यह दौड़

आज एक जवान मुझे कहने लगा कि आपका सेना कम करने का विचार बहुत ठीक है। मुझे उसकी बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। मैं उससे ऐसी बात सुनने की उम्मीद नहीं करता था। मैं तो मानता था कि शायद वह ऐसी बात कहेगा कि आप का यह विचार फजूल है। लेकिन उसने वैसा नहीं कहा। उसने हमारे विचारों को मान्यता दी और अन्त में पूछा कि यह काम होगा कैसे? मैंने उसे समझाया कि अमेरिका ने चन्द्र पर जाने की तैयारी की है। उसके लिए वह १५ अरब रुपया खर्च कर रहा है। ४५ करोड़ रुपया तो वह केवल अपनी सेना के लिए खर्च कर रहा है। हमारी पंचवर्षीय योजना जितना खर्च तो केवल उसका सेना के लिए है। अतः मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि क्या सेना बढ़ाकर अमेरिका का मुकाबला कर सकते हैं? इसमें शक नहीं कि आप मुकाबला नहीं कर सकते हैं? तब आप मुकाबला किससे करेंगे? पाकिस्तान से? अमेरिका का अन्दर से इशारा नहीं होगा तो पाकिस्तान आप से लड़ने की हिम्मत हरगिज नहीं करेगा। अमेरिका पाकिस्तान को युद्ध के लिए कब प्रोत्साहित करेगा? जब उसकी तैयारी विश्व-युद्ध करने की होगी। अमेरिका पाकिस्तान को मदद करेगा, तब क्या दूसरे देश चुप बैठे रहेंगे? इसलिए सारी परिस्थिति देखते हुए सेना घटाने की बात बहुत ही महत्त्वपूर्ण व व्यावहारिक है। सेना कम करने के लिए हिम्मत और हिकमत की जरूरत है।

मैं हवाई किले बनानेवाला आदमी गिना जाता हूँ। लेकिन राजाजी धरती पर रहनेवाले कुशल राजनीतिज्ञ पुरुष हैं। उन्होंने भी सेना कम करने की बात कही है। इसलिए इस बात को अब आप व्यावहारिक कह कर टाल नहीं सकते।

नैतिक कदम अत्यन्त मजबूत होना चाहिए

मुझे यह कहने में खुशी होती है कि इस साल अपनी सरकार ने २५-३० करोड़ रुपया सेना पर खर्च करना कम किया है। इस काम में हिम्मत है और हिकमत भी है, लेकिन यह बहुत थोड़ा है। इससे पूरा नैतिक असर नहीं होगा। दुनिया में ऐसा काम करना चाहिए, जिससे एकदम धक्का सा लगे।

अपनी सरकार को सेना कम करने की बात हम तब कह सकते हैं, जब कि अपने देश के अन्दर गोली चलने का मौका न आने दें। किसी भी जगह न हम भोपाल बनने दें, न सीतामढ़ी और न अहमदाबाद। उसके लिए हमें शहरों की सेवा करनी होगी। शहरों में अशांति के अनेक कारण होते हैं। उन कारणों को मिटाने तथा जनता को आश्वस्त रखने के लिए हमें शहरवालों की पूरी-पूरी सेवा करनी होगी। जनता का विश्वास प्राप्त होगा, तभी हम दुलन्दी के साथ सरकार के सामने भी अपनी बातें रख सकेंगे। शहरों की अन्तर्गत शांति के लिए पुलिस की अवांछनीयता सिद्ध करने के बाद ही सर्वोदय-विचार की प्रतिष्ठा होगी।

शांति के लिए बहनें आगे आयँ

सभा में बहुत सी बहनें उपस्थित हैं। वे मानती हैं कि दर्शन से हमारा काम हो जाता है। उनका यह मानना 'निरा भ्रम' नहीं है, लेकिन उन्हें यह भी समझना चाहिए कि केवल दर्शन से सारा काम पूरा नहीं हो जाता। अगर ऐसा ही होता तो भगवान हमें काम क्यों देते? बहनों का काम घर की और बच्चों की सेवा करना तो है ही, लेकिन उसके अलावा पुरुषों के काम में मदद करना भी है। आज तक बाहर के काम की जिम्मेवारी पुरुषों पर डाली गयी। इससे इन २५ वर्षों में दो-दो महायुद्ध हो गये। तीसरे की तैयारियाँ हो रही हैं। इसलिए विश्व-संकट से बचाने के लिए पुरुषों के हाथ से सारा कारोबार स्त्रियों को ले लेना चाहिए।

अभी जनेवा में 'पाँच बड़ों' के मिलने की बात हो रही है। मैं कहना चाहता हूँ कि 'पाँच बड़े' नहीं, किन्तु अब पाँच "बड़ियाँ" मिलनी चाहिए। याने बहनों को आगे आना चाहिए। शान्ति के लिए बहनों का एक मोर्चा बनना चाहिए। जहाँ कहीं अशांति हो, वहाँ बहनें जाकर खड़ी हो जायँ और दंगा करनेवालों से कहें कि बंद करो दंगा। बहनों का तत्काल असर होता है। दंगा करनेवाले रुक जायेंगे।

स्त्री हमारी सभ्यता की मूर्ति है। वह बीच में खड़ी होती है तो बहुत बड़ी बात बनती है। लेकिन अगर किसी मौके पर एक-दो बहनें मर भी जाँय या उनका सिर भी फूट जाय तो मैं नाचूँगा। आज तक तेजबहादुर और अर्जुनदेव जैसे पुरुषों के बलिदान हुए। लेकिन अब बहनों के बलिदान होने चाहिए। ◆◆◆

पुरानी शिक्षा : नयी शिक्षा

१—नयी तालीम याने नये मूल्यों की स्थापना। पुरानी तालीम चोरी को पाप समझती थी। नयी तालीम न सिर्फ चोरी को, बल्कि अधिक संग्रह को भी पाप समझती है।

२—पुरानी तालीम शारीरिक और मानसिक परिश्रमों के मूल्यों में फरक करती थी। नयी तालीम दोनों का मूल्य समान मानती है। इतना ही नहीं, दोनों का समन्वय करती है, दोनों का समन्वय साधती है।

३—पुरानी तालीम क्षमता की इज्जत करती थी, नयी तालीम क्षमता को समता की दासी समझती है। पुरानी तालीम लक्ष्मी, शक्ति और सरस्वती को स्वतंत्र देवता के रूप में पूजती थी, नयी तालीम मानवता को पूजती है और इन तीनों को उनकी सेवा का साधन समझती है।

◆◆◆

अनुक्रम

१. आप सरकारी नौकर की हैसियत से नहीं, बल्कि....
चुरू २१ मार्च '५९ पृष्ठ ४४५
२. शिक्षा वह है, जो शरीर, आत्मा और शिल्प को....
बस्तीकलाँ ११ मई '५९ ,, ४४७
३. भारत अपनी तरक्की के लिए लोकशाही में....
होशियारपुर १७ मई '५९ ,, ४४९
४. अहिंसा और शान्ति की शक्ति को प्रकट करने से....
मुकेरिया १९ मई '५९ ,, ४५०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।